ग्रामीण विकास विभाग
बिहार सरकार

अन्दर के पृष्ठों में...

संघर्ष से उभरकर
आत्मनिर्भरता की मिसाल
(पृष्ठ – 02)

सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत
कंचन देवी ने शुरु किया नया जीवन
(पृष्ठ – 03)

सतत् जीविकोपार्जन योजना से
मिली नई राह
(पृष्ठ – 04)

सतत् जीविकोपार्जन योजना

एक नई राह

माह – दिसंबर 2025 ।। अंक – 53

सतत् जीविकोपार्जन योजनाः आत्मनिर्भर बिहार की ओर सशक्त कदम

बिहार सरकार द्वारा संचालित सतत् जीविकोपार्जन योजना राज्य के अत्यंत निर्धन परिवारों के जीवन में स्थायी बदलाव लाने की एक प्रभावशाली पहल बनकर उभरी है। यह योजना केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं है, बल्कि सम्मानजनक आजीविका, आत्मविश्वास और सामाजिक समावेशन का मार्ग भी प्रशस्त कर रही है। गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य के साथ शुरू की गई यह योजना आज हजारों परिवारों के लिए आशा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुकी है।

योजना की अवधारणा और उद्देश्य

सतत् जीविकोपार्जन योजना का मूल उद्देश्य अत्यंत निर्धन और सामाजिक रूप से हाशिये पर खड़े परिवारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। योजना के अंतर्गत ऐसे परिवारों की पहचान की जाती है, जिन्हें नियमित आय के अवसर उपलब्ध नहीं हैं। इसके बाद उन्हें उनकी रुचि, क्षमता और स्थानीय संसाधनों के अनुरूप जीविकोपार्जन गतिविधियों से जोड़ा जाता है, ताकि वे दीर्घकालीन और स्थायी आय स्रोत विकसित कर सकें।

आर्थिक सहायता और आजीविका समर्थन

योजना के अंतर्गत सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता को समय के साथ सुदृढ़ किया गया है। वर्तमान में पात्र परिवारों को रुपये दो लाख तक की सहायता उपलब्ध कराई जा रही है, जिससे वे पशुपालन, कृषि आधारित गतिविधियों, लघु व्यापार, हस्तशिल्प, खाद्य प्रसंस्करण या सेवा क्षेत्र में अपना उद्यम शुरू कर सकें। इसके साथ–साथ तकनीकी मार्गदर्शन, प्रशिक्षण और निरंतर परामर्श भी दिया जाता है, ताकि उद्यम केवल शुरू ही न हों, बल्कि सफलतापूर्वक संचालित भी हो सकें।

महिला सशक्तीकरण की मजबूत आधारशिला

सतत् जीविकोपार्जन योजना ने महिला सशक्तीकरण को एक नई दिशा दी है। जीविका स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाएँ इस योजना से जुड़कर स्वरोजगार अपना रही हैं। आज राज्य के विभिन्न जिलों में महिलाएँ डेयरी, बकरी पालन, सिलाई–कढ़ाई, किराना दुकान, सब्जी उत्पादन जैसे कार्यों से न केवल अपनी आय बढ़ा रही हैं, बल्कि परिवार के निर्णयों में भी सशक्त भूमिका निभा रही हैं।

ग्रामीण के साथ शहरी गरीबों तक विस्तार

इस योजना की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसका लाभ अब शहरी क्षेत्रों के निर्धन परिवारों तक भी पहुँचाया जा रहा है। शहरी निर्धन परिवारों की पहचान कर उन्हें कौशल प्रशिक्षण और स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समावेशी विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

सतत् जीविकोपार्जन योजना का प्रभाव केवल आय वृद्धि तक सीमित नहीं है। इसने लाभार्थियों में आत्मसम्मान, सामाजिक पहचान और भविष्य के प्रति विश्वास पैदा किया है। आज कई परिवार साहूकारों पर निर्भर होने के बजाय अपने व्यवसाय से नियमित आय अर्जित कर रहे हैं। बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण पर भी इसका सकारात्मक असर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना बिहार के विकास यात्रा का एक सशक्त स्तंभ बन चुकी है। यह योजना साबित करती है कि सही नीति, प्रभावी क्रियान्वयन और समुदाय की भागीदारी से गरीबी उन्मूलन किया जा सकता है। आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता बिहार, आज सतत् जीविकोपार्जन योजना के माध्यम से समृद्धि और सामाजिक न्याय की नई कहानी लिख रहा है।

संघर्ष से उभरकर आत्मनिर्भरता की मिसाल

सहरसा जिले के सिमरी बख्तियारपुर प्रखंड के सरडीहा पंचायत की रुणा देवी कभी परिवार के रोज़मर्रा के खर्चों के लिए भी जूझती थीं, लेकिन आज आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं। पहले वह एक साधारण गृहणी थीं, पर कठिनाइयों ने उन्हें मजबूती से खड़ा होना सिखाया। उनके पति वीरेंद्र ठाकुर मजदूरी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे।एक दिन काम करते वक्त ग्राइंडर मशीन में गंभीर हादसे में उनका हाथ कट गया और वे श्रम करने में असमर्थ हो गए। इसके बाद घर की पूरी जिम्मेदारी रुणा देवी पर आ गई। चार छोटे बच्चों की परवरिश, पति का इलाज और हर दिन के खर्च, सब कुछ उन पर आ गया। कमाई का कोई स्थायी साधन न होने के कारण वे खेतों में मजदूरी करतीं और दूसरों के घरों में काम कर किसी तरह परिवार चलातीं, पर आय इतनी कम थी कि हालात लगातार बिगड़ती जा रही थी।

इसी कठिन समय में जीविका उनके लिए उम्मीद लेकर आया। वह महादेव जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह से ऋण लेकर उन्होंने अपने पति का इलाज करवाई। उन्हें बाजार की तुलना में कम ब्याज दर पर कर्ज मिलने से बड़ी राहत मिली। इससे उन पर आर्थिक दबाव कम हुआ और वह किस्तों में ऋण वापस कर सकीं।

उनकी खराब स्थिति को देखते हुए उनका चयन सतत् जीविकोपार्जन योजना के लाभार्थी के रुप में किया गया। योजना के तहत उन्हें विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये मिले, जिससे उन्होंने बकरी खरीदी। साथ ही जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रुप में प्रति माह 1000 रुपये के हिसाब से 7 माह में 7,000 रुपये उन्हें मिला। बकरी पालन से हुई कमाई से उन्होंने एक गाय खरीदी। गाय का दूध बेचकर उनकी आय बढ़ी, बचत हुई और वे अपनी बेटी की शादी भी कर पाई।

इसके बाद सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत उन्हें 30,000 रुपये की जीविकोपार्जन निवेश निधि से बकरी पालन के लिए मिली, जिससे उनका व्यवसाय और सुदृढ़ हो गया। आज उनके पास गाय और बकरियाँ दोनों हैं, जो नियमित आय का स्रोत बन चुका है। कभी जीवनयापन के लिए संघर्ष करने वाली रुणा देवी आज लघु उद्यमी के रूप में पहचान बना रही हैं। उनकी यह यात्रा हिम्मत, मेहनत और आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से आई दीदी के घर में खुशहाली

कटिहार जिले के पंचायत पूर्वी बारीनगर के गांव शर्मा टोला की रहने वाली शबाना खातून, खुशी जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य हैं । वह बचपन से ही आर्थिक तंगी का सामना की थी। बड़ा परिवार और आमदनी के सीमित साधन के कारण उनके पिता उपने परिवार का भरण–पोषण ठीक से नहीं कर पाते थे। गरीबी की वजह से शबाना दीदी पांचवीं कक्षा के आगे की पढ़ाई नहीं कर पाईं । छोटी उम्र से ही उनके जीवन निरंतर संघर्ष से भरा हुआ था।

शबाना दीदी का परिवार वर्षों से ताड़ी बेचकर गुजर–बसर करता था, लेकिन शराबबंदी लागू होने के बाद ताड़ी बिक्री बंद हो जाने से उनका परिवार बेरोजगार हो गया था। स्थिति और कठिन इसलिए हो गई क्योंकि उनके पति इस्तीयाक मंसूर एक हाथ से दिव्यांग हैं और मेहनत वाले कार्य नहीं कर पाते हैं। मजबूरी में शबाना दीदी खेतों में मजदूरी करने लगीं। लेकिन मजदूरी नियमित नहीं मिलती थी। दो छोटे बच्चों को भोजन और कपड़े तक सही से उपलब्ध नहीं हो पाता था। जीवन पूरी तरह संकट में घिर गया था।

इसी बीच 8 अगस्त 2020 को सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत खुशी जीविका महिला ग्राम संगठन द्वारा चयनित होने के बाद उनकी जिंदगी ने नया मोड़ लिया। प्रशिक्षण और निरंतर मार्गदर्शन के साथ–साथ ग्राम संगठन ने उन्हें 20,000 रुपये मूल्य का सामान उपलब्ध कराकर किराना दुकान शुरू करवाया। दुकान का उद्घाटन ग्राम संगठन की सदस्यों ने स्वयं किया। आज यही दुकान उनके परिवार की खुशहाली का आधार बन चुका है। दीदी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दे पा रही हैं और परिवार के अन्य सदस्य भी दुकान के संचालन में उनका सहयोग करते हैं। समय के साथ उन्होंने किराना दुकान के साथ अंडा की दुकान भी शुरू कर दी है, जिससे उनके परिवार की आय और भी बढ़ गई है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से आत्मनिर्भर बनी दीदी

पटना ज़िले के सम्पतचक प्रखंड के झुझारपुर गाँव की संगीता देवी, बजरंग जीविका स्वयं सहायता समूह, माही जीविका महिला ग्राम संगठन सदस्य हैं। सतत् जीविकोपार्जन योजना से पहले उनका जीवन लगातार संघर्षों से भरा था। उनके पति मजदूरी करते थे, लेकिन पति को शराब की लत लगने के बाद परिवार की पूरी जिम्मेदारी संगीता देवी पर आ गई। तीन छोटे बच्चों की पढ़ाई, भोजन और दैनिक जरूरतों को पूरा करना उनके लिए बेहद चुनौतीपूर्ण हो गया था। मजबूरी में उन्होंने घर–घर जाकर चौका–बर्तन का काम शुरू किया, परंतु इतनी मेहनत के बावजूद भी घर का पूरा खर्च निकाल पाना मुश्किल था।

इसी कठिन समय में माही जीविका महिला ग्राम संगठन ने उनकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्हें सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत चयन किया गया। योजना से जुड़ने के बाद उन्हें सबसे पहले विशेष निवेश निधि के रूप में 10,000 रुपये की सहायता मिली। इसके बाद जीविकोपार्जन निवेश निधि की प्रथम किस्त की राशि 20,000 रुपये से ग्राम संगठन के द्वारा परचून सामान की खरीद कर उनकी दुकान शुरू करवाई गई। साथ ही जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रूप में सात महीनों में कुल 7,000 रुपये भी उन्हें प्राप्त हुए। संगीता देवी ने मेहनत और लगन से इस दुकान को आगे बढ़ाया और धीरे–धीरे लगभग 45,000 रुपये मूल्य की संपत्ति अर्जित कर ली। इसके बाद दूसरी किस्त में 9,000 रुपये और तीसरी किस्त में 54,000 रुपये की सहायता मिलने से उन्होंने अपने परचून व्यवसाय को और विस्तृत कर लिया।

आज संगीता देवी के पास लगभग 1,95,000 रुपये की कुल संपत्ति है। दुकान की आय से उन्होंने एक भैंस भी खरीदी, जिससे अतिरिक्त आमदनी होती है। पहले जहां वह बुनियादी जरूरतों के लिए भी संघर्ष करती थीं, वहीं आज वह आत्मनिर्भर होकर पूरे परिवार की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। उनके पास 1,25,000 रुपये का दुकान का सामान, बैंक में 15,500 रुपये और 15,000 रुपये की बचत है। उनका सपना है कि वे अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें और भविष्य में अपनी दुकान को और बड़ा रूप दें। उनकी यह यात्रा साबित करती है कि सही सहयोग और दृढ़ संकल्प किसी भी जीवन को नई दिशा दे सकता है।

सतत् जीविकोपार्जन योजना की बदौलत कंचन देवी ने शुरू किया नया जीवन

शेखपुरा जिला के शेखपुरा सदर प्रखंड के महसार पंचायत में रहने वाली कंचन देवी, चाँदनी जीविका महिला ग्राम संगठन और वीणा पाणी जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की सदस्य हैं। पहले वह अत्यंत गरीबी में जीवन व्यतीत कर रही थीं। पहले उनका पुरा परिवार मजदूरी पर निर्भर था, लेकिन नियमित काम न मिलने के कारण दो वक्त का भोजन जुटाना भी मुश्किल हो जाता था। वर्ष 2019 में कंचन देवी जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य बनीं। शुरुआत में साप्ताहिक 10 रुपये बचाना भी कठिन था, पर समूह की दीदियों ने उन्हें हिम्मत दी और बैठकों में नियमित रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

बाद में जब ग्राम संगठन स्तर पर सतत् जीविकोपार्जन योजना के तहत सबसे गरीब परिवारों की पहचान की जा रही थी, तब कंचन देवी सभी मापदंडों पर खरी उतरीं। योजना के तहत उन्हें भैंस पालन शुरू करने का सुझाव मिला। सूक्ष्म नियोजन के उपरांत उन्हें जीविकोपार्जन निवेश निधि के तहत 20 हजार रुपये, विशेष निवेश निधि के रुप में 10 हजार रुपये और जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि के रुप में प्रति माह 1 हजार रुपये माह के हिसाब से कुल 7 हजार रुपये प्रदान किए गए। इस सहयोग से कंचन देवी ने भैंस पालन शुरू किया और उनके घर की आमदनी धीरे–धीरे बढ़ने लगी।

आय में सुधार होने पर उन्हें योजना की द्वितीय किस्त के रूप में 50 हजार रुपये मिले, जिससे उन्होंने एक और भैंस खरीदी। अब अधिक दूध बेचकर वह अच्छा लाभ कमा रही हैं। इसके बाद तीसरी किस्त के 54 हजार रुपये मिलने पर उन्होंने एक छोटा किराना दुकान भी शुरू कर दी। वर्तमान में कंचन देवी की मासिक आमदनी 10 से 15 हजार रुपये के बीच है।

अब वह अपने बच्चों को पौष्टिक भोजन दे रही हैं और उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेजती हैं। जीविका से जुड़ने के बाद उन्होंने जरूरी कागजात बनवाए और कई सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त किया। पहले संकोची रहीं कंचन अब आत्मविश्वास से भरी हैं। उनका कहना है कि जीविका ने उनकी जिंदगी बदल दी और आज वह सम्मानपूर्वक जीवन जी रही हैं।

सतत् जीविकोपार्जन योजना से मिली नई राह: विभा कुमारी की हिम्मत, संघर्ष और आत्मनिर्भरता की कहानी

मरैया ग्राम, परवत्ता प्रखंड, खगड़िया जिला की विभा कुमारी आज आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं। लेकिन यह सफर उनके लिए बेहद कठिन रहा है। विभा, शिवम जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं, जो पिपरा लतीफ पंचायत के उन्नति जीविका महिला ग्राम संगठन और संकल्प जीविका महिला संकुल स्तरीय से जुड़ा है। आज वह अपने दम पर जीवन को संभाल रही हैं, लेकिन कभी एक समय ऐसा भी था जब हर दिन उनके लिए संघर्ष से भरा था।

शादी के शुरुआती वर्षों में विभा का जीवन सामान्य था, लेकिन जल्द ही हालात बदल गए। उनके पति ने दूसरी शादी कर ली और तीन छोटी बेटियों के साथ उन्हें घर से निकाल दिया। कहीं जाने की जगह न होने के कारण विभा मायके लौट आई, पर मायके की स्थिति भी बहुत कमजोर थी। पिता की मामूली आमदनी और परिवार की पहले से ही कठिन हालत के बीच तीन बच्चों की ज़िम्मेदारी उठाना उनकी क्षमता से बाहर था। मजबूर होकर उन्होंने मजदूरी और खेतों में काम करना शुरू किया, ताकि किसी तरह बच्चों को पाल सकें। लेकिन मेहनत के बावजूद उनकी आय इतनी नहीं थी कि परिवार की बुनियादी जरूरतें पूरी हो सकें।

इसी बीच जीविका की सामुदायिक साधन सेवी दल मरैया इलाके में सतत् जीविकोपार्जन योजना के अंतर्गत सबसे कमजोर परिवारों की पहचान कर रही थी। विभा की परिस्थिति देखते हुए उन्हें इस योजना के लिए चुना गया। उनके लिए यह चयन किसी उम्मीद की किरण से कम नहीं था। योजना में शामिल होने के बाद सबसे पहले उन्हें 10,000 रुपये की सहायता दी गई, जिससे उन्होंने बकरी पालन शुरू किया। दो बकरियों के साथ शुरू हुई यह आजीविका धीरे–धीरे उनके जीवन की मुख्य आधार बन गई।

इसके बाद उन्हें 16,000 रुपये की अतिरिक्त सहायता प्राप्त हुई, जिससे उन्होंने बकरी पालन का विस्तार किया। जीविकोपार्जन अन्तराल सहायता राशि की सभी सात किस्तें, कुल 7,000 रुपये उन्हें समय पर मिली, जिसने उनके छोटे व्यवसाय को स्थिरता दी। लगातार मिल रही सहायता और स्वयं की मेहनत से उनकी बकरियों की संख्या बढ़कर 11 हो गई। बकरी पालन से उनकी आमदनी में अच्छा सुधार आया और घर की आर्थिक स्थिति बेहतर होती गई।

बकरी पालन के साथ विभा ने घर पर कपड़े सिलाई का काम भी शुरू किया, जिससे उन्हें प्रतिमाह 4,000 रुपये से अधिक की अतिरिक्त आमदनी होने लगी। अब वह बच्चों की जरूरतें पूरी करने के साथ–साथ भविष्य के लिए भी बचत कर पा रही हैं। पहले जहाँ बच्चों की पढ़ाई रोक देने की स्थिति बन गई थी, वहीं आज उनकी तीनों बेटियाँ नियमित रूप से स्कूल जा रही हैं। भोजन, कपड़े और पढ़ाई, जो कभी कठिनाई थे, अब आसानी से पूरे हो रहे हैं।

जीविका की मदद से विभा ने सभी जरूरी कागजात भी बनवा लिए हैं और विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ उठा रही हैं। इन योजनाओं ने उनके जीवन में स्थिरता लाने में बड़ी भूमिका निभाई है। बैठकों में वह अब खुलकर अपनी बात रखती हैं, निर्णय लेती हैं और अन्य महिलाओं को भी जागरूक व आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती हैं।

विभा कुमारी का कहना है, "सतत् जीविकोपार्जन योजना ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी। पहले हर दिन संघर्ष था, आज हम सम्मान से जीते हैं। मेरी बेटियाँ पढ़ रही हैं, यही मेरी सबसे बड़ी खुशी है।"

विभा की कहानी यह साबित करती है कि सही सहयोग और अपनी मेहनत से कोई भी महिला कठिन परिस्थितियों को पीछे छोड़कर आत्मनिर्भरता की नई मिसाल बन सकती है। सतत् जीविकोपार्जन योजना ने उन्हें सिर्फ आर्थिक मजबूती ही नहीं दी, बल्कि आत्मविश्वास, पहचान और नई उम्मीद भी दी है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी – कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार